स होवाच पितरं तत कस्मै मां दास्यसीति। द्वितीयं तृतीयं तं होवाच मृत्यवे त्वा ददामीति॥४॥

अर्थ – उसने (नचिकेता ने) पिता से कहा हे तात! किस (ऋत्विग्) के लिए मुझको देंगे। इस प्रकार दो बार और तीन बार उसने (नचिकेता ने) उनसे (पिता से) कहा। (तब पिता ने क्रोधित होकर कहा) मृत्यु (यमराज) के लिए तुमको देता हूँ।

पदच्छेद – सः। ह। पितरम्। उवाच। तत। कस्मै। माम्। दास्यसि। इति। द्वितीयम्। तृतीयम्। ह। तम्। उवाच। मृत्यवे। त्वा। ददामि। इति।

व्याख्या– जैसा कि पूर्व प्रसंग से ज्ञात होता है कि ऋषि वाजश्रवस (उद्दालक) बूढ़ी और शक्तिहीन गौओं का दान कर रहे हैं। उनके द्वारा इस प्रकार का अधार्मिक कृत्य लोभवश किया जा रहा था। नचिकेता ने अपने पिता के लोभ और तज्जनित अधार्मिक कृत्य को देखा तो वह उनको रोकने के लिए उनके पास जाता है और बारंबार पूछता है कि वे उसको दानस्वरूप किसे दे रहे हैं। उद्दालक ने पहले तो नचिकेता के इस प्रश्न को बालसुलभ प्रश्न मानकर ध्यान नहीं दिया किन्तु उसके बार-बार पूछने पर क्रोधित हो गए और क्रोधवश कह दिया कि मैं तुमको मृत्यु को दान दे रहा हूँ।

बहूनामेमि प्रथमो बहूनामेमि मध्यमः।
किंस्विद् यमस्य कर्त्तव्यं यन्मयाद्य करिष्यति॥५॥

अर्थ – अनेक शिष्यों और पुत्रादिकों के बीच मैं प्रथम हूँ। बहुतों में मैं माध्यम स्थान रखता हूँ। यम का कौन सा कार्य है जो आज मेरे द्वारा कराया जाएगा।

पदच्छेद – बहूनाम्। एमि। प्रथम:। बहूनाम्। एमि। मध्यम:। किंस्वित्। यमस्य। कर्त्तव्यम्। यत्। मया। अद्य। करिष्यति।

व्याख्या–

यद्यपि उद्दालक ने नचिकेता को श्राप दे दिया था जिसका अर्थ यही था कि उसकी मृत्यु हो जाय, परंतु नचिकेता इससे उद्वेलित होने के बदले यह सोचने लगा कि वह अपने पिता का पुत्र और शिष्य दोनों है। कई छात्रों की तुलना में वह श्रेष्ठतम है तो कई की तुलना में मध्यम भी है। किन्तु वह कभी भी पुत्र अथवा छात्र के रूप में निम्नकोटि का नहीं रहा है। जब उसके पिता और गुरु ने उसको मृत्यु के पास जाने को कहा है तो निश्चय ही इसमें उसका कल्याण है और वह अपने पिता और गुरु का कौन सा कल्याण कर सकता है, यह भी विचारणीय है। उल्लेखनीय है कि नचिकेता तनावग्रस्त होने के बजाय इस चिंतन में लीन हो गया कि मृत्यु के देव यमराज के द्वारा उससे कौन सा कार्य कराया जाएगा जिसके लिए उसके पिता ने उसको दान के रूप में यमराज को दे दिया है।

अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथाऽपरे।
सस्यमिव मर्त्य: पच्यते सस्यमिवाजायते पुन:॥६॥

अर्थ – आप अपने पूर्वजों के सदृश देखिये अर्थात् आप अपने पिता, पितामह, आदि के समान आचरण करें तथा अन्य वर्त्तमान साधु-सज्जन पुरुषों के चरित्र की ओर भी

देखिये। मरणशील यह मनुष्य अन्न की खेती के समान पक जाता है अर्थात वृद्धावस्था को प्राप्त होकर मर जाता है और मरकर अन्न के समान पुन: उत्पन्न होता है।

पदच्छेद – अनुपश्य। यथा। पूर्वे। प्रतिपश्य। तथा। अपरे। सस्यम्। इव। मर्त्य:। पच्यते। सस्यम्। इव। आजायते। पुन:।

व्याख्या – उद्दालक ने जब क्रोधवश नचिकेता को मृत्यु को दान कर दिया तो उनको अपनी गलती का भान हुआ और वे शोकाकुल हो उठे क्योंकि उन जैसे ऋषि का वचन मिथ्या नहीं हो सकता था और नचिकेता की मृत्यु सुनिश्चित हो गयी थी और वह भी उसके पिता के शाप के कारण। शोकाकुल पिता को देख नचिकेता उनके पास जाता है और उनको समझते हुए कहता है कि हे पिताजी! आप अपने पूर्वजों और वर्त्तमानकालिक साधु-संतों को देखें क्योंकि उन सबका एक ही उपदेश है कि जो कथन किया गया है उसका पालन अवश्य होना चाहिए। आप उसी परंपरा का अनुसरण करें और मेरी मृत्यु के प्रति उत्पन्न अपने मोह का परित्याग कर दें। मनुष्य भी मरणधर्मा है। यह उस अन्न के समान ही है जो उत्पन्न होता और मृत्यु को प्राप्त कर पुन: नवीन जन्म को पता है। आप कृपया मुझे मृत्यु का वरन करने दें ताकि आपका आदेश पालन हो सके और आपके वचन भी मिथ्या सिद्ध न हों। आप ऋषि हैं और सत्य के मार्ग से मोहवश विमुख नहीं हों। यदि आपके वचन मिथ्या होंगे तो आपके ऋषिपद के सम्मान का नाश होगा। इस प्रकार नचिकेता अपने पिता को ढाढ़स देता है और उनके अपराध-बोध को कम करता है। उसकी बातों की गहराई को समझते हुए उद्दालक उसे यम के घर जाने की अनुमति दे देते हैं।